B.A. Part II
(Sub)

1st Day.

हुमायूँ

बाबर की मृत्यु के बाद हुमायूँ 1530 ई. में बादशाह बना। हुमायूँ का जन्म 1508 ई. में काबुल में हुआ था। बादशाह बनने के पहले वह बदख्शा का सूबेदार रह चुका था और उसने अनेक युद्धों में बाबर की मदद की थी। जिस समय हुमायूँ बादशाह बना उस समय अनेक समस्याएँ थी। राजनीतिक अस्थिरता थी। महमूद लोदी, नुसरतशाह और शेरशाह अपना-अपना प्रभुत्व बढ़ाने में लगे हुए थे। गुजरात में बहादुरशाह शक्तिशाली हो गया था। इसके अतिरिक्त प्रशासन भी सुसंगठित नहीं था। साम्राज्य अनेक जागीरों में बँटा हुआ था। शाही खजाना खाली हो गया था। इन सबसे बड़ी परेशानी यह थी कि हुमायूँ के भाई विद्रोही हो गये थे। जब बादशाह बना वह हर तरफ से मुसीबतों से घिरा हुआ था।

उसने सर्वप्रथम 1531 ई. में कालिंजर पर आक्रमण किया क्योंकि यहाँ के राजा अफगानों के पक्ष में था। उसने राजा से सन्धि कर ली। यह हुमायूँ की भूल थी कि उसने उसे पराजित नहीं किया।

हुमायूँ ने 1533 ई. में अफगानों के विरुद्ध युद्ध किया तथा उन्हें पराजित किया। इसके बाद उसने शेरशाह के विरुद्ध चुनारगढ़ का घेरा डाला। लेकिन शेरशाह ने आत्मसमर्पण का बहाना बनाकर घेरा उठा लिया। यह हुमायूँ की दूसरी भूल थी जो उसे मजबूत होने का मौका दिया।